

DPN 6363

Title : मन्त्र व वासः / MANTRA VA VĀSAḤ

Run. No. 7054

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Tantra*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 10 X 5

Folios 25

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

कपीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Together with *Āyurveda* *anubadha*

Material : palmleaf / paper / *thyasaphu* /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. इति नगरक्षेत्रप्रवेशनमन्त्र ॥ 2. ॐ सर्वभूतभक्षण उभयकस्य पादौ कीलय हूँफट् ॥
3. हाम् चर्ण, चेल, कस्ति सभामभाग (समान) याहु मास १ नंक महावृषी सलस्वति ॥

5

मन्त्र व वास्तः

ॐ ह्रीं

कराणि नृपत वज्रोपाय

भवा आहा

ॐ ह्रीं

5

10

0

CMS

३१ १४

(सि)

१३ ११ ९

८ १५ १०

(काचिकता अष्टमं धनु
 जन्तु, कसञ्जसवायाडी, ध
 जन्तु, जलनसिन्नाडी, विः
 ग्रामसडाक, कोनक, सा
 नू, कोहान विद्यासायिजी, जन्ति कोहान
 अष्टस्यसङ्गडी, लूनाकोहान, पन्दिनरु
 यन्, दक्षिणकोहान, संयन, कभुगशय

(हामुचू, धन, कोस, सरोमरा
 हायाड, मासा, नंका, मरावृधिस
 नस्यान् ॥ ॥ (घनासयाप, विः
 दिगस, धनरु, धुयाय, धोन, कसि
 धयनासराग, आवज, निवा, वाजनी
 ६, ६, वाजराया, साकु, वृधिराधय
 य ॥ ॥

ॐ ह्रीं ४ महामाया ॥ महामाया नमः
 स्तेनमः ॥ ॥ हन्र वाहन्र जम्वन
 वा ॥ स्यन्धु मनयि धन्यो नमः
 या इड ॥ गगनप्रयन गुटिदधक २
 सनस्रकि साधन मं नु न छि जा पड
 विट स्वधन सा आ सनस्रकि सा न
 पू ल्ले रुय क धून धारव म लाड नम

ॐ नमो पुष्टा क सचकन न प्रमो ॥
 ॥ हा ड ति वा गी स्ता हा ॥ आ दक्ष २१
 ॥ व्या हान ना कि स्या य पुष्टा द मू ॥
 ॥ नू मा न द मू स म क न म नि आ क ॥
 ॥ नो म गु न न म म का न य म ॥ ॥
 ॥ ॐ ह्रीं ४ महामाया ॥ महामाया नमः

॥ ८२ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ प्रथमः सूक्तः ॥ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ अथ निडाः सप्तः ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥
 ॥ अथ प्रियं जायाय मन्त्रः ॥ ९४ ॥

॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 ॥ मन्त्रः नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥
 ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥
 ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥
 ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

॥ रुक् गन शान सां ता न न या य रु ॥
 ॥ न यु नु यि भा अ वा क मि डा ज ग भा ॥
 ॥ ता ज न या य आ रु त य य का य न ॥
 ॥ का धु न न न डा ज य अ १०६ क ध ॥
 ॥ स न ये न र वा स न य रु य म ड ड ज ॥
 ॥ गु म वा यि न सा मि का य का मि ज ॥

(सर्वेदडाडाया)

॥ वृ त मि न क य के सर्वेदडाडाध ॥
 ॥ म रु य म ड आ मि ण ज न या य य रु ॥
 ॥ डा शान सा नो ज ता डा नि डा ज न ओ ॥
 ॥ न सा यि त्र या डा न सर्वेदय नाम रु ॥
 ॥ आ ॥ १०५ ॥ ड न म वा का ध य म ॥
 ॥ हा य ति स त्रा य अ के मे न क रु रु ॥

ॐ

१॥ रुट स्वाहा ॥ धन न जा कि न नाद ॥
 २॥ न यो य रु ॥ ॥ ॥ रु मा जी थो म ॥
 ३॥ व वी घ रु न रु न रु रुट ॥ धन न जा ॥
 ४॥ कि न ना द न या य रु ॥ ॥ ॥ रु न ॥
 ५॥ म ॥ रु व रु वा या ही म व ड रु रु ॥
 ६॥ रु रु रु न रु न रु रुट ॥ धन रु रु रु ॥
 ७॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥

१॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 २॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 ३॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 ४॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 ५॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 ६॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥
 ७॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु ॥

॥ नमं हूं हूं महानक्षत्र जाय हूं हूं हूं ॥
 ॥ स्यादा ॥ पुढराय दनयाय नखे ॥
 ॥ ऊय या हूं खात्रमिय स्थुभमरु ॥
 ॥ १७ ॥ १७ वज्रममयतु नमामि कुम्भ ॥
 ॥ जों जों जों जों खादा ॥ कथन ममा ॥
 ॥ नभाभः पूय उभादिनक ॥ ॥ १७ ॥
 ॥ १७ नाकास्य नाका ॥ ॥ १७ ॥

॥ ऊं ऊं हूं हूं स्यादा ॥ उभादिनक कादा ॥
 ॥ नडधसासे पूय उऊयया यं उऊया ॥
 ॥ ॥ १७ काजीकाजीमदांकाज वज्र ॥
 ॥ नाजाडगताजा मठ जा कनीया ॥
 ॥ ॥ १७ श्री जों जों हूं हूं स्यादा ॥ ॥ १७ ॥
 ॥ नख ऊयजय नानक भवन अय ॥
 ॥ नानयाय मरुयक मरात्रक ॥

॥ आ ॥ ॥ ६० ॥ वज्रनासं दंडगता ॥
 ॥ ६१ ॥ यकजठजीं कासरीलव ॥
 ॥ ६२ ॥ दृष्ट्या हा ॥ धम ३ लखजयल ॥
 ॥ ६३ ॥ यं नानेक अविचालयायमरु धर्म ॥
 ॥ ६४ ॥ ननप्रारिया ननयका नक रनय ॥
 ॥ ६५ ॥ नदवदविचान हा अ पनसयया ॥
 ॥ ६६ ॥

॥ य जाकिनयाय रुआ ॥ ॥
 ॥ ६७ ॥ नभा अदसगुत्र काजी ॥ ० पीणी ॥
 ॥ ६८ ॥ धन लाह नद काजी मह काजी ॥
 ॥ ६९ ॥ आरु अमावास्या काजी वद दस ॥
 ॥ ७० ॥ काहा यव प्ररु मु काध गाग रुस ॥
 ॥ ७१ ॥ ख रुना ही राग य सिवा रादा की ॥

॥ नी. रु. त. व. ज. इ. व. त. न. अ. डा. अ. ॥
 ॥ गु. न. कि. म. को. म. नी. रु. रा. की. रु. न. ॥
 ॥ म. रु. व. न. वा. रा. मि. शि. गु. न. अ. ॥
 ॥ ग. म. ॥ ध. म. रु. न. ग. न. डा. म. आ. रु. ॥
 ॥ न. ग. व. न. म. रु. या. हा. डा. ध. म. रु. य. ॥
 ॥ रु. या. हा. म. इ. का. न. क. य. त. या. म. ॥

॥ स. रि. धि. री. रु. डि. डा. म. रु. य. न. व. अ. न. ॥
 ॥ रु. न. ना. क. ध. म. रु. या. रा. क. रु. ग. व. द. ॥
 ॥ रु. न. ग. व. न. क. य. न. रा. यि. डा. दि. ग. म. ॥
 ॥ नि. न. रु. ग. व. न. ध. म. रु. य. कि. मि. अ. ॥
 ॥ नि. न. दि. र्घ. त. न. ज. रु. द. क. रा. रु. म. ॥
 ॥ इ. रु. या. क. रा. मि. न. व. न. मि. न. क. य. ॥
 ॥ क. रु. या. ध. म. ॥ रु. न. ना. क. ॥

मन्त्राय कद द्वा मि क धि मा ॥
 प्रा हा य का डा धे ने द ध म ज्ञा त ॥
 क धे ने रा य म न्त्र यो य द्द रू या ॥
 ज डा स्वा न य य ध डा ने द्द म श्व क ॥
 या य क डा न्ने मि क न क धे २१ ॥
 या य ज्ञा वि धि च डा द म य ज्ञा ॥

विधिदशकं मात्ररुधा॥ १
 उवाच हं दक्षो धनधान्यसिद्धयः
 इकादाशका वावने॥ ॥
 ज्ञानिकाजी उवाचास्ति यदिति॥
 उपकाराजी आदिष्टमन्त्रना॥
 रश्मिनी उवाचा नादा ॐ॥

रुद्रमित्र, द्वितीयः इत्येतादृशं गतिम्
 आरुसमानं, यत्तु यं मिष्टं स्यात्तु, यत्तु
 मं आरुमानं, यत्तु यत्तु दत्तं दत्तं, स
 कर्मगुणोत्तमं, यत्तु यत्तु न न कृतं ॥
 ॥ ॥ नामकननि, गुह्येतिथिः १२ रा
 नू, कर्मात्मानं सत्तु, यत्तु यत्तु कल्याण

यत्तु गमनं, यत्तु गुणं, यत्तु मं गमनं, यत्तु कल्याण
 नू, सामसनिवृद्धं कल्याणं, यत्तु गमनं
 गमनात्तु, यत्तु गमनात्तु, यत्तु गमनं, यत्तु
 यत्तु न दत्तं, यत्तु नामस्य, यत्तु यत्तु
 यत्तु यत्तु ॥ ॥ यत्तु यत्तु, यत्तु यत्तु
 यत्तु यत्तु, यत्तु यत्तु, यत्तु यत्तु

॥ सिद्धिं जं कृणां सैयं लिखनां कृदस्मा
 हा ॥ ध्याय ३३ स्मितां जतां कृय ॥ सुदयं
 हा सुमानसिय दगसा रुत्रथं मावान
 जययाय ॥ सुदयं सुसु ॥ यका पुन
 का सुक खान आ कृगव ॥ थर्गका
 धी नहायि यं कमा त्रिस्तुका रुनाहने

हा पध्याय ११ वा न

॥ सिद्धिं गुन आहा ॥ जगत् २ म हा जग
 तं ॥ म हा जगता गि सिद्ध ॥ जगत् सुग
 जगत् वेधु हा रुं रुट हा हा ॥ का रु
 का रुग माथ १ रुस गथि सैयं यथ ॥ व्य
 थस ॥ रुं रुज व्रिने ॥ रुं रुज ॥ ससंका
 मान ॥ रुं रु आत सा रुका ॥ ॥

10

5

१ सिद्धि गुप्तासु ॥ ईहिं हिं ईं ईं २ रुट
 रुट स्वाहा ॥ धा वत का हु का रु रु ० रु
 रु संग थि रु य ग थि या मं य न य
 रु स पा न का वा य क रु न थं रुं रु
 रु या रु य रु न ॥

॥ श्री १

निदय निविद्यु ईं
 रु व रु रु रु रु

5

10

15

20

(नसु, चर्क, कसर
 (शिवकु, वाते ॥
 (शुधि, समस्तगत्य
 (सुसु, रक्षादभय
 (नसु, गानके, व्या
 (सजाडाया, धिगय
 (रुफडायायाभस
 (कपू, धनजभ
 (गडा, वाजसधने
 (सुसु, रुकु गडा रुग
 (रुभनपुनपासक
 (धरगसमन, निभ
 (मजासाओ,

(कु ककु, सिध
 (नसु, चर्क, कसर
 (सुसु, रक्षादभय
 (नसु, गानके, व्या
 (सजाडाया, धिगय
 (रुफडायायाभस
 (कपू, धनजभ
 (गडा, वाजसधने
 (सुसु, रुकु गडा रुग
 (रुभनपुनपासक
 (धरगसमन, निभ
 (मजासाओ,

(नसु, चर्क, कसर
 (शिवकु, वाते ॥
 (शुधि, समस्तगत्य
 (सुसु, रक्षादभय
 (नसु, गानके, व्या
 (सजाडाया, धिगय
 (रुफडायायाभस
 (कपू, धनजभ
 (गडा, वाजसधने
 (सुसु, रुकु गडा रुग
 (रुभनपुनपासक
 (धरगसमन, निभ
 (मजासाओ,

॥ रुद्राय नमः ॥
 ॥ नवदुःखमात्रं
 (पिपपिपु रुद्राद
 (वैरुद्रं प्रमन
 ध्यायन्नाह मित्रा
 डा हिताया क
 सि सप्तमाया न
 ॥ के धर्ममहया
 सिद्धा ॥ (नवधा
 यत्रि सधु कापि
 दायावर्क हेमनाम
 कथाया ॥
 ववर्कला नवसम
 र्गः सा नवसधु क
 न कथा ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 युवासाकमयानिहार वाशुह
 पुस विनग कासा गुदं पुतिहा
 वृकयुवासा ॥ ॥ युस नग वलरुयु
 आशुगगदयादक्षि रुयु रुवा दधम नन

वम्वधमयन वनस्यया दिशागानन ।
 गुरुजसा धमयकादलनयं गमजासि ॥
 ॥ ॥ साधिरुगुग्रास्य ॥ कपूतधननाना
 अवाजसधन कुरुन नोयज ॥ ॥ रुजध
 न पूतयातयाकाज धतस्मज ववकनज
 दानवतसंदिठ वाजसधनं वाढं गामनास
 गदवानस्य ॥

धज धूम सिंह धान वृषत्वस गज
 धाक ॥ ॥ गुरुलकनकाय वासुच
 कयवका मि राधाया

गदह
 जनास
 दधाम
 स्यताठ

नतसाध
 ढं कसा
 रस विमं
 सिफुनास

मृतसंरयाय
 क ॥

कस्मिवाजन
 द वेदजवा
 शानयादक
 कया ॥

(सरुदवाला मन
 (कसायम सवेना
 (दिगदसतसऽय
 धनकाकनखला
 वाहिनियायल
 अयामागला नक्ष
 यकं ऐस्य लययला
 निकातविमं मिष
 दिनयकाटनवव
 छुमृलेददवतज
 छुमृलेददवतज
 (दिहताचुतयादं
 केचिकया ॥ ॥ हन
 सिध्यानि समयाग
 निहासकादं जि

हदत्र कथना ॥ ॥
 निरुमानय ॥ मरुमनि
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वाकथु लक्ष्मी ॥
 अततत्रहा सिनखाजइइ जानव
 यमदेव थइइ नबासय ॥ ॥ ॥ ॥
 अकवाता धमसज इ ॥ ॥ ॥ ॥
 फ रानी न रेज

10

[illegible]

5

प्र. मवदिये सुकायं ध्वं नृनयकाय
का आविर्भवकुशं स होनि ॥ जलकं न
यकसिनि ॥ येयशुना ॥

(गुगुनिमसः
 (अयामाज्ञेदामसः
 (कपयद्याययासः
 (अविहामसीः
 (कविगुधिमसः
 (वमहामसः
 (कविवाहामसीः
 (मुदिद्यावमसः
 (साधनेदायकः
 (ईमससुयत्वय
 रुठियमानेध्वम
 सत्रयागुसुसुय
 धिकं भगनेयका

अथलेषकमका
 (अजाकिनावानम
 (रयासुने
 (आखिभिधिसुधि
 (याभवाहाधायिप
 (मिगुमाहाकन
 (सध्वेसध्वि
 इइसाहागामसरा
 धनेअजाधने
 सनसुनिवले॥

10

5



ॐ देवक दहमम क हयगु धि
 य. द. रि. श. ज. या. अ. न. त. न. य. ह. या. ध. म.
 स. न. का. र. न. वा. ॥ अ. म. क. स. स. र. न. त. न. म. स.

ॐ देवक दहमम क हयगु धि

5

10

15

20

न कामन॥

॥ कुरु मोक्षन

ॐ हूं हूं कां कां चिक
चिक गु चिक

सा न दस मने ॐ चिक



विमं का सिम दय मां

ॐ हं यगु यगु न न न म चिक चिक । का

अमृकस्य सच्चिनात्मस
॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

ॐ श्री च
अमृक आग ॥
हल २ ना स ॥
॥ ६५ ॥
म ६६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

॥ ममन ॥ ॥ ॐ जों जों जों युक्त आव
 धना धमय हं दृष्ट स्वाहा धा ज्ञा कृत्
 ग्वज यत्न साधो श्रुय के सि निगन अम
 नेम हय के द्य मानन ॥ ॥ ॐ नमो
 गात्र स पत्र यत्र हं दृष्ट स्वाहा धा नमू
 क न ग्व ॥ ॥ ॐ य नि क न या न ध
 मि ॥ ॥ पूणी दु हन

॥ ॐ का धन सी का धन न दना अ हं रु ॥
 ॥ ॐ धा धा १०८ नख क य जय धन वृय
 ॥ सी र्व स न स र्व द्या धि स र्व न आ ग र्म
 ॥ म हा ड न म अ म क आ रु न ना स य र
 ॥ हं थ मि नि मि के न नी म हा र्म वृ श ॥
 ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ धि मि श धि मि द्या य स्वा रु ॥
 ॥ धा न न स न जय या य रु आ ॥ ॥

ॐ नमः श्रीगुरुभ्याम् ॥ सयसा कटिद
 जत्रा को गुरुभ्याम् गुरुतनां विषय
 नन सिद्धिं गुरुभ्याम् वायसय ज्ञानना
 सय अधनना सय ज्ञानना सय नागयध
 धामनना सय हृद ॥ जितवनना दध वा
 धरुस्य धुगु जनाये त्रिनिशस्य विज्या इ
 न मडानसा जिइवनमजा क देवइवनः

हृदी नृ नल

रुजसा नागइवन रुजसा रुतइवन रुव
 सा विज्या इ ह मडानसा जिइवनमजा क
 विज्यामयसा सययाय रुजा जिनयसनाय
 सनाया धम स रिनका ज विज्या इ न गुरु
 भ्याम् ध म मजयाय मडानसा ध जि
 य रुथाया ज कायज सता ज तियाजा न
 कसतय याधि इवनम मडानसा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ सर्वसाधकैः नमो भगवते वासुदेवाय
यद्गुरुः ॥ ॥ पूर्ववत्तु यत्किञ्च वादो
कीर्तयेत्तत्तु सागारिस्तु मया ॥ ॥

ॐ विद्महे नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
महाशक्तिः ॥ ॥ पूर्ववत्तु यत्कि

ञ्च सनाधियते नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ सर्वविद्याधियते नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥